ماہِ رمضان آیا

माहे रमज़ान आया

मुरत्तिब
अबुल इत्र हज़रत मौलाना मुफ़्ती
मोहम्मद अब्दुस्सलाम साहेब अमजदी

ताजुल इस्लाम हुजूर शेरे नेपाल, हजरत अल्लामा
मुफ़्ती जैश मोहम्मद सिद्दीक़ी बरकाती साहब क़िब्ला
की तसनीफ़ात

1) ग़ैब की पाँच बातें
2) अज़ाने खुतबा और इक़ामत
3) अहसनुल कलाम फ़ी रद्दिल क़िरात ख़लफ़ल इमाम
4) बीस रकअत तरावीह दलाइल की रौशनी में
5) काबा या मज़ारे आदम (अलैहिस्सलाम) ?
6) हदयतुल अनाम
7) दाढ़ी की शरई हद व हैसियत
8) चार बड़े गुनाह
9) तलाक़ के दो अहम बाब
10) फ़तावा बरकात
11) इस्लाहुल अक़ाइद

बराए दुआ सेहत व सलामती
मोहतरमा हज्जानी गुलाब बी
अल्लाह इन्हें शिफ़ा अता फ़रमाए।

आप हर नमाज़ के बाद इनकी शिफ़ा
और सेहत याबी के लिये ज़रूर दुआ करें

بسم اللہ الرحمن الرحیم

ماہ رمضان آیا

माहे रमज़ान आया

मुरत्तिब

अबुल इत्र हज़रत मौलाना मुफ़्ती

मोहम्मद अब्दुस्सलाम साहेब अमजदी

नज़रे सानी

ख़लीफ़ए हुज़ूर शेरे नेपाल, हज़रत मौलाना

मोहम्मद आरिफ़ साहेब बरकाती

शैख़ुल हदीस ग़ौसिया ग़रीब नवाज़, इन्दौर

ब एहतिमाम

हज़रत मौलाना **मोहम्मद उमर साहेब रज़वी**

हज़रत मौलाना **मोहम्मद सुल्तान साहेब रज़वी**

रज़वी कम्प्यूटर, इन्दौर–9827014799, 9827083720

अक़ीदत के फूल

मोहसिने इंसानियत, कारसाज़े उम्मत,

हुज़ूरे अक़दस मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

और आपके तमाम महबूबों की बारगाह में

इन्तिसाब

- उस्ताज़े मोहतरम ताजुल इस्लाम हुज़ूर शेरे नेपाल मुफ़्ती **जैश मोहम्मद सिद्दीक़ी बरकाती** साहेब क़िब्ला
- अम्मां हुज़ूर मोहतरमा अज़ीमा ख़ातून
- वालिदे मोहतरम मौलाना मोहम्मद ज़मीरुद्दीन क़ादरी
- चचाजान मौलाना मोहम्मद ज़ाकिर हुसैन नूरी
- प्यारे भाई मौलाना मोहम्मद कलामुद्दीन क़ादरी
- अज़ीज़ दोस्त मेकश रज़ा मौलाना मो. अलाउद्दीन बरकाती
- मेरी प्यारी बेटी शगुफ़्ता फ़ातिमा उर्फ़ तरन्नुम फ़ातिमा सल्लमहा के नाम

प्यार महब्बत

और दुआ का प्यासा

मुहम्मद अब्दुस्सलाम अमजदी बरकाती

(तारापट्टी नेपाल)

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

रमज़ान की फ़ज़ीलत — 4
रोज़े के तीन दौर — 5
रमज़ान के फ़ज़ाइल — 6
रोज़ा के फ़ज़ाइल — 9
बद नसीब हैं जिसकी मग़फ़िरत न हो — 12
माहे रमज़ान कैसे गुज़ारें — 13
रोज़ा के ज़रूरी मसाइल — 14
सहरी और इफ़्तारी — 15
बीस रकअत तरावीह दलाइल की रोशनी में — 17
अब इख़्तिलाफ़ ख़त्म — 21
एतिकाफ़ के फ़ज़ाइल व मसाइल — 23
शबे क़द्र का बयान — 25
शबे क़द्र नाम क्यूँ ? — 27
फ़ज़ाइले शबे क़द्र — 27
फ़रिश्ते ज़मीन पर उतरते हैं — 29
एक हैरत अंगेज़ रिवायत — 30
शबे क़द्र कौन सी रात है ? — 33
शबे क़द्र की नफ़्ल नमाज़ें — 35
शबे क़द्र के वज़ाइफ़ — 37
इस गदा की गुज़ारिश — 38
ईदुल फ़ित्र और सदक़ए फ़ित्र — 38
ईद का नाम ईद क्यों रखा ? — 41
तारीख़े ईद — 41
ईदुल फ़ित्र की रात और दिन की फ़ज़ीलत — 42
सदक़ए फ़ित्र — 46
सदक़ए फ़ित्र के मसाइल — 46
ईद के दिन के मुसतहब्बात — 47
हो सके तो यह भी करें — 47

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ

रमज़ान की फ़ज़ीलत

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِىْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى
وَالْفُرْقَانِ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا
اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ

तर्जमा : रमज़ान का महीना जिसमें कुरआन उतरा लोगों के लिये हिदायात और रहनुमाई और जो बीमार या सफ़र में हो तो तुम में जो कोई यह महीना पाए ज़रूर उसके रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो तो उतने रोज़े और दिनों में। **(सूरए बकरह, आयत 185)**

पिछली दो आयतों में अल्लाह तबारक व तआला ने रोज़ए रमज़ान की फ़र्ज़ियत का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया : ऐ ईमान वालो! फ़र्ज़ किये गए हैं तुम पर रोज़े जैसे किये गए थे उन लोगों पर जो तुम से पहले थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। यह गिनती के चन्द रोज़ हैं फिर जो तुम से बीमार हो या सफ़र में हो तो उतने रोज़े और दिनों में रख ले और जो लोग इसे बहुत मुश्किल से अदा कर सकें उनके ज़िम्मे फ़िदया है एक मिस्कीन का खाना और जो ख़ुशी से ज़्यादा नेकी करे तो वह उसके लिये ज़्यादा बेहतर है और तुम्हारा रोज़ा रखना ही बेहतर है तुम्हारे लिये अगर तुम जानते हो **(अल बकरह, आयत 183, 184)**

जब रोज़े की फ़र्ज़ियत का हुक्म मोमिनीन पर नाज़िल हुआ तो उसमें मोमिनीन की तस्कीन और उनकी भलाई और बेहतरी का भी ज़िक्र कर दिया गया। रोज़े से हासिल होने वाले फ़वाइद का भी बयान फ़रमा दिया गया ताकि रोज़ा रखने वाले यह न समझें कि रोज़े से मशक़्क़त बढ़ जाती है और इसमें कोई फ़ायदा नहीं। इस लिये इरशाद हुआ कि देखो यह रोज़े अगली उम्मतों पर भी फ़र्ज़ थे और उन्होंने भी रखा, इस लिये तुम भी रखो इसमें तुम्हारे लिये बे

शुमार फ़वाइद और भलाइयाँ हैं क्योंकि जो बन्दा रोज़ा रखता है वह नफ़्स से मुक़ाबला करता है और नफ़्स अख़लाक़े रज़ीला और घटिया सिफ़ात व शैतानी वसवसों से पाक महफ़ूज़ हो जाता है और साथ ही साथ जिस्म को मुख़्तलिफ़ बीमारियों से तन्दुरुस्ती व सेहत हासिल होती है, इन्सान तक़्वा व तहारत और पाकीज़गी वाला हो जाता है, रोज़े से अल्लाह का कुर्ब हासिल होता है, उसकी ख़ुश्नूदी मयस्सर होती है, रोज़ा शहवतों को तोड़ता है और रोज़े दार को बुराइयों से दूर रखता है।

रोज़े के तीन दौर

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिजरत फ़रमाकर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो हर माह तीन रोज़े और आशूरा के रोज़े रखते थे फिर अल्लाह तआला ने रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ कर दिये। रमज़ान के रोज़े जब फ़र्ज़ हुए तो इब्तिदा में यह हुक्म था कि जो चाहे रोज़ा रखे और जो रोज़ा रखना न चाहे तो वह एक मिस्कीन को खाना खिला दे। फिर यह हुक्म उठा लिया और मज़कूरा आयत नाज़िल फ़रमाकर हर तन्दुरुस्त मुसलमान आक़िल व बालिग़ मर्द व औरत पर लाज़िम कर दिया। मरीज़, मुसाफ़िर और हैज़ व निफ़ास वाली औरतों को रोज़ा न रखने की रुख़्सत दे दी और वह बूढ़ा शख़्स जो रोज़ा रखने की ताक़त न रखता हो उसे हुक्म हुआ कि एक रोज़ा के बदले किसी मिस्कीन को खाना खिला दे, लेकिन बीमार जब तन्दुरुस्ती पा जाए और मुसाफ़िर की मुद्दते सफ़र ख़त्म हो जाए और औरतें हैज़ व निफ़ास से पाक हो जाएं तो उन पर उन रोज़ों की क़ज़ा ज़रूरी है।

पहले यह भी हुक्म था कि सोने से पहले खाना पीना और बीवी से सोहबत जाइज़ थी और सो जाने के बाद यह चीज़ें ममनूअ हो जाती थीं। फिर यह हुक्म भी उठा लिया गया और अब सुबह सादिक़ से पहले तक यह सारी चीज़ें मुबाह हो गईं, जैसा कि इरशादे बारी तआला है। हलाल कर दिया गया है तुम्हारे लिये

रमज़ान की रातों में अपनी औरतों के पास जाना।

(बग़वी, जि. 1, स. 214-216, इब्ने कसीर, जि. 1 व दीगर कुतुबे तफ़सीर)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने रमज़ान की फ़ज़ीलत और उसकी अज़मत व अहमियत को बयान फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि रमज़ान का महीना वह मुक़द्दस महीना है कि जिसमें बन्दों की हिदायत व रहनुमाई और हक़ व बातिल के दरमियान फ़ैसला करने वाली किताब क़ुरआने अज़ीम नाज़िल हुई और रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुए। रमज़ान और उसके रोज़ों की फ़ज़ीलत में बे शुमार अहादीसे मुबारका किताबों में दर्ज हैं। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मुसलमानों को रोज़ा रखने की ताकीद फ़रमाई, रोज़ेदार को जन्नत और अज्रे अज़ीम की बशारत दी और रोज़ा न रखने वालों के हक़ में अल्लाह तआला की वईदें और अज़ाबे इलाही में मुब्तला होने की ख़बरें दीं और फ़रमाया कि जो शख़्स बिला उज़्र रोज़ा न रखकर रमज़ान की ना क़द्री करेगा वह घाटे और नुक़सान में रहेगा, अल्लाह तबारक व तआला के ग़ज़ब व क़हर को अपने ऊपर मुबाह करेगा।

रमज़ान के फ़ज़ाइल

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : जब रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शैतानों को क़ैद कर दिया जाता है। **(मुस्लिम जि, 1, स. 346)**

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब रमज़ान आता है तो रहमत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शैतान ज़ंजीरों में जकड़ दिये जाते हैं। **(मुस्लिम, जि. 1, स. 346)**

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

जब माहे रमज़ान की पहली रात होती है तो शैतान और सरकश जिन्नों को हथकड़ी लगा दी जाती है और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं तो उनमें से कोई दरवाजा खोला नहीं जाता और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं उनमें से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता और मुनादी आवाज़ लगाता है : ऐ भलाई के तलबगार ! नेकी की तरफ़ बढ़ और ऐ बुराई के ख़्वाहिश मन्द ! बुराई से रुक जा। अल्लाह तआला रमज़ान के हर रात दोज़खियों को दोज़ख से आज़ाद फ़रमाता है।

(मिश्कात, स. 173, तफ़सीरे बग़्वी, जि. 1, स. 222)

तिर्मिज़ी की रिवायत में इतना और है : फिर वह मुनादी कहता है कि कोई बख़्शिश तलब करने वाला है जिसे बख़्श दिया जाए, कोई सवाल करने वाला है जिसे अता किया जाए, कोई तोबह करने वाला है जिसकी तोबह कुबूल की जाए।

सुबह तक यह निदा होती रहती है और अल्लाह तबारक व तआला हर ईदुल फ़ित्र की रात दस लाख ऐसे बन्दों को बख़्श देता है जिन पर अज़ाब वाजिब हो चुका होता है।

(तिर्मिज़ी, जि. 1,स. 147, मुस्तदरक, जि. 1, स. 582)

वज़ाहत : ऊपर ज़िक्र की गई तीनों हदीसों में बयान हुआ कि माहे रमज़ान में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के बन्द कर दिये जाते हैं और यह भी बयान हुआ कि शैतानों को क़ैद कर दिया जाता है। इसका मतलब यह भी है कि हक़ीक़त में जन्नत के दरवाज़े रमज़ान की आमद पर खोल दिये जाते हैं और दोज़ख के बन्द कर दिये जाते हैं। ऐसा करने में रमज़ान की अज़मत व फ़ज़ीलत बयान करना मक़सूद है और इस बात की तरफ़ इशारा भी कि रमज़ान तमाम महीनों में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त व अज़मत का हामिल है और यह खुसूसी शान इसी मुबारक माह को हासिल है और क्यों न हो कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : रमज़ान तमाम महीनों का सरदार है।

और यह भी हो सकता है कि हक़ीक़त में तो जन्नत के दरवाज़े नहीं खोले जाते हैं और न जहन्नम के दरवाज़े बन्द होते हैं, हां इस माह में लोगों के कसरत के साथ नेकियाँ और आमाले सालिहा करने के सबब अल्लाह तआला परवानए नजात अता फ़रमाकर दुख़ूले जन्नत का हुक्म जारी फ़रमाता है जो दरवाज़ए जन्नत के खुलने का सबब होता है। और चूँकि इस मुक़द्दस माह में रोज़ों, तिलावते कुरआन और दीगर आमाल की वजह से अल्लाह अपने बन्दों की मग़फ़िरत फ़रमा देता है जो जहन्नम में न जाने का सबब होता है, जिसकी ताबीर हदीस में दोज़ख के दरवाज़े बन्द होने से कर दी, इस लिये कि जो शख़्स दोज़ख का मुस्तहिक़ नहीं होगा उस पर तो दोज़ख का दरवाज़ा बन्द होगा ही।

और शैतान को इस माह में इस लिये बन्द कर दिया जाता है ताकि रोज़ेदार को अपना शिकार न बना सके और वर ग़ला कर ख़ुदा की ताअत व बन्दगी और रोज़े के फ़ज़ाइल से महरूम न कर सके और बन्दा अपने दुश्मन से मुतमईन और बे ख़ौफ़ होकर अपने रब की इबादत में मसरूफ़ रहे। लेकिन सवाल होता है कि जब शैतान बन्द हो जाता है तो फिर रमज़ान में लोगों से गुनाहों का इर्तिकाब क्यों हो जाता है ? ख़ुराफ़ात और मआसी (गुनाहों) में कैसे फंस जाता है ? अपने रब की ना फ़रमानी कैसे कर बैठता है? जब कि बहकाने वाला दुश्मन शैतान बन्द होता है। इसका **जवाब** यह है कि शैतानों में जो बड़े बड़े और सरकश होते हैं वह मुक़य्यद कर दिये जाते हैं और आम शयातीन खुले रहते हैं और यही वसवसा डालकर गुनाहों के क़रीब कर देते हैं।

और दूसरा **जवाब** यह है कि गुमराह करने वाला एक अन्दुरूनी शैतान होता है जो बन्द नहीं किया जाता और दूसरा बाहरी शैतान होता जो बन्द कर दिया जाता है और उसी अन्दुरूनी शैतान के बहकाने और बुराइयों पर उकसाने से इन्सान गुनाह करके इस महीने की हुरमत पामाल कर देता है।

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रजियल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबिये करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जन्नत को शुरू साल से लेकर आने वाले साल तक सजा दिया जाता है तो जब रमज़ान का पहला दिन होता है तो अर्श के नीचे जन्नत के पत्तों से हूरे ऐन पर खुश्बूदार हवा चलती है तो हूरें अर्ज़ करती हैं ऐ रब ! अपने बन्दों में ऐसे को मेरे शोहर बना दे जिनसे मेरी आँखें ठन्डी हों और मुझसे उनकी आँखों को ठन्डक (ख़ुशी) मिले। **(मिश्कात, स. 174)**

हजरत इब्ने मस्ऊद रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : अगर मेरी उम्मत को मालूम हो जाता कि रमज़ान में कितनी ख़ैरो बरकत है तो मेरी उम्मत पूरे साल रमज़ान के होने की तमन्ना और आरज़ू करती।

(तम्बीहुल ग़ाफ़ेलीन, स. 186)

रोज़ा के फ़ज़ाइल

रोज़ा अल्लाह तआला के हुक्म बजा लाने और ताअत (फ़रमांबरदारी) इबादत की निय्यत के साथ जान बूझकर खाने पीने और जिमाअ् (बीवी से सोहबत) करने से रुक जाने का नाम है, लेकिन यह उसी वक़्त सही माना में अज्र व सवाब का सबब बनेगा जब तमाम ख़िलाफ़े शरअ़ बातों मसलन झूट, ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरह ख़ुराफ़ात से भी रोज़ादार बचेगा वर्ना खाना पीना तर्क कर देना बेकार होगा। इस लिये रोज़ादार को चाहिये रब की रज़ा और रोज़े पर मिलने वाले अज्र व सवाब पाने के लिये रोज़े को बातिल कर देने वाली चीज़ों के अलावा रोज़े की मकरूहात से भी बचता रहे। अगर यह कैफ़ियत पैदा हो गई तो यक़ीनन ऐसा आदमी हदीसे कुदसी : रोज़ा मेरे लिये और मैं ख़ुद उसकी जज़ा दूँगा, का मुस्तहिक़ होगा और फ़रमाने रिसालत : रोज़े दार के मुंह की बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क से भी ज़्यादा ख़ुश्बूदार है,, का भी हक़दार होगा।

हज़रत अबू हुरैरह रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : इन्सान ने रोज़े के सिवा हर अमल अपने लिये किया है और रोज़ा ख़ास कर मेरे लिये रखा, उसकी जज़ा मैं दूँगा। और रोज़ा ढाल है, तुम में से किसी का रोज़ा हो तो वह उस दिन बेहूदा गोई करे न फ़ोहश गोई करे। अगर कोई शख़्स उसे गाली दे या उससे झगड़ा करे तो वह कह दे मैं रोज़ादार हूँ, मैं रोज़ादार हूँ, उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद की जान है, रोज़ादार के मुंह की बू अल्लाह तआला के नज़दीक क़ियामत के दिन मुश्क की ख़ुश्बू से ज़्यादा ख़ुश्बूदार होगी। रोज़ेदार को दो ख़ुशियाँ हासिल होंगी जिनसे वह ख़ुश होगा, जब वह रोज़ा इफ़्तार करता है तो इफ़्तार से ख़ुश होता है और जब वह अपने रब से मुलाक़ात करेगा तो रोज़े से ख़ुश होगा। **(मुस्लिम, जि. 1, स. 363)**

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रजियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जिसने ईमान और सवाब की निय्यत के साथ रमज़ान के रोज़े रखे वह गुनाहों से इस तरह पाक हो जाता है जैसे अभी वह मां के पेट से पैदा हुआ हो। **(नसई, जि. 1, स. 308)**

हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जन्नत में एक दरवाज़ा है जिसको रय्यान कहा जाता है, क़ियामत के दिन उस दरवाज़े से सिर्फ़ रोज़ेदार दाख़िल होंगे, उनके सिवा कोई और दाख़िल नहीं होगा कहा जाएगा,, रोज़ेदार कहाँ हैं ? फिर रोज़ेदार दाख़िल हो जाएंगे और जब आख़री रोज़ा दार दाख़िल हो जाएगा तो फिर वह दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा फिर उस दरवाज़े से कोई शख़्स दाख़िल नहीं होगा।

(मुस्लिम, जि. 1, स. 364)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने ईमान की हालत में तलबे सवाब के लिये माहे रमज़ान के रोज़े रखे उसके अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और जिसने माहे रमज़ान में ईमान की हालत में तलबे सवाब के लिये क़याम (तरावीह की नमाज़ को अदा) किया उसके अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएँगे और जिसने शबे क़द्र में ईमान व तलबे सवाब के साथ इबादत की उसके अगले पिछले तमाम गुनाह बख़्श दिये जाएँगे। **(मिश्कात, स. 173)**

वज़ाहत : इन अहादीस और कुतुबे अहादीस में जो मरवियात हैं उनसे माहे रमज़ान के रोज़े की फ़ज़ीलत वाज़ेह तौर पर मालूम हो गई और यह भी कि रोज़े दार को नमाज़े तरावीह और रमज़ान की रातों में नफ़्ल नमाज़ पढ़ने पर अल्लाह तबारक व तआला अज़ीम सवाब अता फ़रमाता है और जहन्नम के अज़ाब से नजात देता है और उसके लिये जन्नत का एक दरवाज़ा ख़ास कर देता है जिस दरवाज़े से सिर्फ़ रोज़ादार ही जन्नत में दाख़िल होंगे। हदीस में यह भी आया है कि नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब दूसरे माह के सत्तर फ़र्ज़ के बराबर मिलता है और रोज़ादार को इफ़्तार कराने का सवाब गुलाम आज़ाद करने के बराबर मिलता है अगरचेह पानी ही से इफ़्तार क्यों न कराया हो और यह भी मरवी है कि रोज़े के अलावा इन्सान की हर नेकी को दस से सात सो गुना तक बढ़ा दिया जाता है, रोज़े चूँकि बन्दा सिर्फ़ ख़ुदा के लिये रखता है उसमें रिया और दिखावे का दख़ल नहीं जिसकी जज़ा (बदला) ख़ास तौर पर अल्लाह तआला ख़ुद अता फ़रमाता है इस लिये कि रोज़ा दूसरे तमाम आमाल से जुदा है, उसके अज्रो सवाब का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता और न ही उन्हें शुमार किया जा सकता है रोज़े पर मिलने वाले सवाब को अल्लाह तआला ही जानता है।

रमज़ान में इन्सान को इस बात का ख़याल ज़रूर रखना चाहिये कि रोज़ा रखकर तमाम बुराइयों और अल्लाह की ना फ़रमानियों से दूर रहे बल्कि यह निय्यत भी हो कि रमज़ान के बाद भी नाफ़रमानी नहीं करेंगे। चुनाँचे हज़रत कअ़ब रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं कि जिसने रमज़ान के रोज़े रखे और उसकी यह निय्यत हो कि रमज़ान के बाद भी अल्लाह की ना फ़रमानी नहीं करेगा तो अल्लाह तआला उसे बग़ैर हिसाब व किताब के जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा। **(तफ़सीर, इब्ने कसीर, जि. 4, स.920 उर्दू)**

हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जिसने माहे रमज़ान के रोज़े रखे, पाँचों वक़्त की नमाज़ें अदा कीं और ख़ानए कअ़बा का हज किया तो अल्लाह तआला के ज़िम्मए करम पर है कि उसकी बख़्शिश फ़रमा दे। **(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 8, स. 223)**

बद नसीब है जिसकी मग़फ़िरत न हो

बहुत से लोगों को देखा है जो इस मुक़द्दस महीने की हुरमत की पामाली और उसकी ना क़द्री करते हैं और रोज़ा रखने से जी चूराते हैं, अगर रखते हैं तो दीगर गुनाह के कामों से बचने की कोशिश भी नहीं करते, रोज़ा दार हैं और नाजाइज़ गाने सुनते हैं, रोज़ादार हैं, और तिलावते क़ुरआन की बजाए टी.वी. पर फ़िल्म और नाटक देखते हैं, गाली गलोच और भी बहुत से ख़िलाफ़े शरअ़ काम करते हैं। इस तरह रब की रहमत और उसकी मग़फ़िरत से मेहरूम हो जाते हैं। रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हैं, ना रखने वाला हराम का मुरतकिब और अल्लाह की वईद व अज़ाब का मुस्तहिक़ होता है। कितने बद नसीब हैं जो इस मुक़द्दस महीने में भी मग़फ़िरत से महरूम हो जाते हैं। हदीस में है कि जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम मिम्बर पर तशरीफ़ ले जाते वक़्त पहली बार आमीन फ़रमाया था तो सहाबा के दरयाफ़्त करने पर आपने फ़रमाया कि जिब्रईल अलैहिस्सलाम कह रहे थे, माहे रमज़ान को

पाए और मग़फ़िरत से महरूम हो जाए। और यह भी मरवी है कि जिसकी मग़फ़िरत माहे रमज़ान में न हो सकी तो किस महीने में होगी। **(कन्जुल उम्मल, जि. 8, स. 270, मुलख्खसन)**

हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तक मेरी उम्मत माहे रमज़ान की हुरमत (इज़्ज़त) बाक़ी रखेगी और रुसवा नहीं होगी। एक शख़्स ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! रुसवाई कैसी ? हुज़ूर ने फ़रमाया कि रमज़ान में जिसने हराम काम किया या कोई गुनाह किया, शराब पी या ज़िना किया उसका रमज़ान (कोई रोज़ा) कुबूल नहीं किया जाएगा और आइंदा साल तक उस पर अल्लाह की, उसके फ़रिश्तों की और आसमान वालों की लानत होगी। अगर इस अर्सा में (आइंदा साल तक) मर जाएगा तो अल्लाह की बारगाह में उसकी कोई नेकी, नेकी (की सूरत में क़ुबूल) न होगी। **(गुनयतुत तालिबीन, स.358, उर्दू)**

माहे रमज़ान कैसे गुज़ारें

इस मुक़द्दस माह में रोज़े रखे और साथ ही ब कसरत तिलावते कुरआन भी करे ताकि जहाँ आपका पूरा वजूद रब की ताअत व बन्दगी में मसरूफ़ रहे वहीं आपकी ज़बान भी ज़िक्रे इलाही में तर रहे और आप को रब से हम कलामी का शरफ़ हासिल होता रहे। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : रोज़ा व कुरआन बन्दे की शफ़ाअत करवाऐंगे, रोज़ा कहेगा ऐ मेरे रब ! मैंने इस आदमी को दिन में खाने पीने और शहवत से बाज़ रखा इसलिये मेरी शफ़ाअत इसके हक़ में कुबूल फ़रमा ले। कुरआन कहेगा ऐ रब ! मैंने इसे रात में सोने से बाज़ रखा इस लिये मेरी सिफ़ारिश इसके हक़ में कुबूल फ़रमा।

सदक़ा व ख़ैरात, ज़कात और ख़ास कर सदक़ए फ़ित्र का ख़याल रखें क्योंकि जो शख़्स सदक़ए फ़ित्र अदा नहीं करता उसका रोज़ा ज़मीन व आसमान के बीच मुअल्लक़ रहता है यहाँ तक कि उसे अदा कर दिया जाए।

रोज़ा के ज़रूरी मसाइल

(1) अदाए रमज़ान का रोज़ा और नज़रे मोअय्यन व नफ़्ली रोज़े की नियत, रात से करना ज़रूरी नहीं। अगर दोपहर से पहले नियत कर ली तब भी रोज़े हो जाएंगे (2) अगर आँख में दवा डाली या सुर्मा लगाया तो रोज़ा नहीं टूटा। अगरचे दवा का क़तरा हलक़ में महसूस होकर सुर्मा, थूक, या रेंठ के साथ निकले (3) मर्द ने पैशाब के सूराख़ में पानी या तेल डाला तो रोज़ा नहीं टूटेगा अगरचे मसाना तक पहुँच जाए और अगर औरत ने शर्मगाह में टपकाया तो रोज़ा टूट जाएगा (4) इंजेक्शन से रोज़ा नहीं टूटता है चाहे रग में लगाया जाए या गोश्त में (5) इसी तरह ग्लूकोज़ की बाटल चढ़ाने से भी रोज़ा नहीं टूटेगा (6) रमज़ान में टूथ पेस्ट का इस्तेमाल करने से एहतियात रखे कि उसके बारीक अज्ज़ा हलक़ में पहुँच जाएँ तो रोज़ा टूट जाएगा इसलिये रोज़े की हालत में बचना ही चाहिये (7) कान में तेल डाला या चला गया तो रोज़ा जाता रहा और पानी कान में चला गया या डाला तो रोज़ा नहीं टूटा (8) जान बूझकर मुँह भर कै (उल्टी) की और रोज़ेदार होना याद है तो मुतलक़न रोज़ा जाता रहा, और इससे कम की तो नहीं। (9) और अगर बिला इख़्तियार कै हो गई और वह मुँह भर नहीं है तो रोज़ा न गया अगरचे लोट गई या उसने ख़ुद लोटाई। (10) और अगर बिला इख़्तियार कै हुई और वह मुँह भर है और उसने लोटाई अगरचे उसमें से सिर्फ़ चने के बराबर हलक़ से उतरी तो रोज़ा जाता रहा वरना नहीं।

मस्अला : कै के यह अहकाम उस वक़्त हैं कि कै में खाना आए या ज़र्दी या ख़ून और अगर बलग़म आया तो मुतलक़न रोज़ा न टूटा

(11) बोसा लिया मगर इन्ज़ाल न हुआ तो रोज़ा नहीं टूटा। (12) भूल से जिमाअ् (बीवी से सोहबत) कर रहा था याद आते ही अलग हो गया या सुबह सादिक़ से पहले जिमाअ् में मशग़ूल था सुबह होते ही जुदा हो गया रोज़ा न गया अगरचे दोनों सूरतों में

जुदा होने के ब ाद इन्ज़ाल हो गया अगरचे दोनों सूरतों में जुदा होना याद आने और सुबह होने पर हुआ और अगर याद आने या सुबह होने पर फ़ौरन अगर न हो अगरचे सिर्फ़ ठहर गया और हरकत न होगी रोज़ा जाता रहा। (बहारे शरीअत)

(नोट : रोज़े के बाक़ी मसाइल बहारे शरीअत से मालूम करें)

सहरी और इफ़्तारी

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने सहरी खाने का हुक्म फ़रमाया और फ़रमाया कि उसमें बरकत ही बरकत है और बहुत सारे फ़वाइद पर मुश्तमिल है, जैसे अगर आदमी सहरी के लिये उठेगा तो तहज्जुद भी पढ़ लेगा। कुछ ज़िक्रे इलाही भी करेगा और चूँकि सहरी खाना हुज़ूर की सुन्नत है तो आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की इस सुन्नत पर भी अमल होता रहेगा और सरकार ने फ़रमाया कि जो मेरी सुन्नत से महब्बत रखेगा वह मेरे साथ जन्नत में होगा। (मिश्कात, स.30)

सहरी में ताख़ीर और इफ़्तारी में जल्दी करना चाहिये।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : सहरी खाया करो क्योंकि सहरी में बरकत है।

(बुख़ारी, जि. 1, स. 257, 1823,)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सहरी खाकर दिन के रोज़े के लिये ताक़त हासिल करो और दिन को क़ैलूला करके रात की इबादत के लिये मदद हासिल करो। **(इब्ने माजह, स. 123, 1693)**

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : सेहरी में बरकत ही बरकत है इस लिये इसे मत छोड़ो अगरचेह एक घूंट पानी ही पी लो।

(मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जि. 3, स. 12)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते सेहरी करने वालों पर दुरूद भेजते हैं।

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : हमारे और यहूदो नसारा के रोज़ों में फ़र्क़ सेहरी खाना है।

(मुस्लिम हदीस नं. 1096)

यानी यहूदो नसारा रोज़ा रखने में तो सहरी नहीं करते और हम सहरी करते हैं इसलिये उनकी मुख़ालफ़त करते हुए मुसलमानों को चाहिये कि सहरी ज़रूर कर लें।

हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मेरी उम्मत के लोग भलाई पर रहेंगे जब तक वह रोज़ा जल्द इफ़्तार करते रहेंगे।

(मुस्लिम, जि. 1, स. 350, तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 88)

हदीसे क़ुदसी में है कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : मेरे बन्दों में मुझे सबसे ज़्यादा महबूब वह हैं जो इफ़्तार में जल्दी करते हैं। (मुस्लिम, जि. 1, स.350)

इस लिये हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम का मामूल था कि सूरज डूबने से पहले किसी सहाबी को हुक्म फ़रमाते कि वह बलन्दी पर जाकर सूरज देखता रहे, सहाबी सूरज को देखते रहते और हुज़ूर उनकी ख़बर के मुन्तज़िर रहते, जैसे ही सहाबी अर्ज़ करते कि सूरज डूब गया, हुज़ूर फ़ौरन तनावुल फ़रमाते। **(फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, जि. 1, स. 513)**

मस्अला : रोज़ा इफ़्तार करने की दुआ इफ़्तार करने के बाद पढ़े कि यही सुन्नते रसूले करीम है। अगर किसी ने पहले ही पढ़ ली तो सुन्नत पर अमल न होगा और वह सवाब नहीं मिलेगा जो सुन्नत पर अमल करने का है। हज़रत मआज़ बिन ज़ोहरा

रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम इफ़्तार कर लेते तो यह दुआ फ़रमाते -

अल्लाहुम्मा लका सुम्तु व अला रिज़्क़िका अफ़तरतु

(मिश्कात, स. 175)

इस हदीस के तहत हज़रत मुल्ला अला क़ारी रहमतुल्लाहे अलैह फ़रमाते हैं कि इब्ने मलिक ने कहा कि आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम यह दुआ इफ़्तार के बाद पढ़ते।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मुझे रोज़े में जल्दी इफ़्तार करने और सेहरी में ताख़ीर का हुक्म दिया गया है।

(सुनने कुबरा, जि. 4, स. 238)

हज़रत सुलैमान बिन आमिर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब तुम में कोई इफ़्तार करे तो उसे चाहिये कि खजूर से करे, क्यों कि इसमें बरकत है, अगर खजूर न हो तो पानी से करे क्यों कि पानी पाक होता है। **(तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 83)**

बीस रकअत तरावीह दलाइल की रोशनी में

तरावीह बीस रकअत है और सुन्नते मुअक्कदह, सुन्नते ऐन है। जमाअत के साथ नमाज़ जिस मस्जिद में अदा की जाती है उसमें तरावीह का क़ायम करना सुन्नते किफ़ाया और बीस रकअत पर सहाबए किराम, ख़ुलफ़ाए राशेदीन रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन और अइम्मए मुज्तहेदीन का इज्माअ व फ़ुक़हाए हन्फ़िया, शाफ़इय्यह, हम्बलिया, मालिकियह का इत्तिफ़ाक़ है।

दलाइल

(1) सहाबिये रसूल हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल क़ारी फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के हमराह रमज़ान शरीफ़ की एक रात मस्जिद में गया तो देखा कि लोग अलग अलग नमाज़ पढ़ रहे हैं, कोई तन्हा पढ़ रहा है कोई कुछ लोगों के साथ। यह देख कर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपना ख़याल ज़ाहिर फ़रमाया कि इन नमाज़ियों को एक इमाम के पीछे जमा कर दूँ तो ज़्यादा बेहतर होगा। चुनाँचे उन सब को हज़रत उबय बिन कअब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की इक़्तिदा में जमा कर दिया। फिर दूसरी रात आपके साथ में मस्जिद गया, लोग उस वक़्त अपने इमाम के पीछे नमाज़े तरावीह पढ़ रहे थे, यह देख फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया : यह क्या ही अच्छी बिदअत है।

(बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 269)

(2) हज़रत सय्यदा आएशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम रमज़ानुल मुबारक में एक रात आधी रात को मस्जिद तशरीफ़ ले गए और सहाबए किराम को मस्जिद के अन्दर तरावीह की नमाज़ पढ़ाई, सुबह लोगों में चर्चा हुआ, दूसरे दिन और ज़्यादा लोग जमा हो गए और हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की इक़्तिदा में नमाज़ अदा की, फिर सुबह को उसका चर्चा हुआ तो तीसरी रात मस्जिद के नमाज़ी और ज़्यादा हो गए। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए, नमाज़ पढ़ी और लोगों ने भी नमाज़ आपके साथ पढ़ी। जब चौथी रात हुई तो नमाज़ियों से मस्जिद तंग हो गई, उस रात सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम फ़ज्र की नमाज़ को ही निकले तो जब फ़ज्र की नमाज़ अदा कर ली तो लोगों की तरफ़ मुतवज्जह हुए, तशह्हुद पढ़कर फ़रमाया : अम्मा बअद ! तुम्हारी

मौजूदगी मुझसे पोशीदा नहीं थी मगर मुझे अन्देशा हुआ कि (तरावीह) तुम पर फ़र्ज न हो जाए और तुम उसकी अदाएगी से आजिज़ आ जाओ। और सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के विसाल शरीफ़ तक मुआमला तरावीह का यूँ ही रहा।

(बुखारी जि. 1, स. 269)

वज़ाहत : इन अहादीस के बारे में अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी फ़रमाते हैं : इस रिवायत में रकअतों की तादाद मज़कूर नहीं कि उबय इब्ने कअब कितनी रकअतों के साथ इमामत फ़रमाते थे। तरावीह की तादाद में इख़्तिलाफ़ हुआ है। मुअत्ता में हज़रत साइब इब्ने यज़ीद ग्यारह और मुहम्मद बिन यूसुफ़ तेरह और एक दूसरे सनद से इन्हीं से इक्कीस रकअत मरवी है। इमाम मालिक ने यज़ीद बिन ख़सीफ़ा की सनद से साइब बिन यज़ीद की रिवायत से वित्र के अलावा बीस रकअत। और यज़ीद इब्ने रूमान से मरवी है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के दौरे ख़िलाफ़त में लोग तेईस पढ़ते थे (इसमे तीन वित्र हैं)। और मुहम्मद बिन नस्र से रिवायत है कि मैंने रमज़ान शरीफ़ में लोगों को बीस रकअत तरावीह पढ़ते पाया और तीन रकअत वित्र। इन रिवायतों में ततबीक़ इख़्तिलाफ़े अहवाल के साथ मुमकिन है।

(3) हज़रत ज़ाफ़रानी, इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहे तआला अलैह से रिवायत करते हैं कि मैंने मदीना मुनव्वरा में लोगों को उन्तालीस रकअत और मक्का मुकर्रमा में तेईस रकअत पढ़ते देखा यानी वित्र समेत। **(फ़तहुल बारी, जि. 4, स. 298)**

(4) हज़रत साइब इब्ने यज़ीद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो, हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के दौरे ख़िलाफ़त में तरावीह की नमाज़ बीस रकअत ही होती थी

और मुगनी में हजरत अली शेरे ख़ुदा रजियल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि आपने एक शख़्स को हुक्म दिया कि लोगों को माहे रमज़ान शरीफ़ में बीस रकअत तरावीह पढ़ाया करे और फ़रमाया यह इज्माअ की तरह है। फिर अगर एतराज़ हो कि हज़रत यज़ीद बिन रूमान से मरवी है कि हजरत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ज़माने में तरावीह तेईस रकअत पढ़ते थे और तुम बीस कहते हो उसका जवाब यह है कि तरावीह बीस ही पढ़ते थे, तीन वित्र पढ़ते थे। **(उमदतुल क़ारी, जि. 7, स. 178)**

(5) हज़रत ज़ैद बिन वहब से मरवी है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो माहे रमज़ान की रात में हमें नमाज़ पढ़ाते थे, अअ़मश ने कहा कि तरावीह बीस रकअत पढ़ाते थे और वित्र तीन। **(उमदतुल क़ारी, जि. 11, स. 127)**

(6) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम रमज़ान में बीस रकअत और वित्र पढ़ते थे।

(अहादीसुस सियाम, स. 47)

ऊपर बयान कर्दा रिवायात से साबित हुआ कि तरावीह बीस रकअत हैं और फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ज़माने में बीस रकअतें पढ़ा करते थे और हजरत उस्माने ग़नी व अलिये मुर्तज़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के अहद में बीस रकअत सहाबा और ग़ैरे सहाबा सभी पढ़ते रहे और बीस रकअत पर ख़ुलफ़ाए राशेदीन और तमाम सहाबा का इज्माअ हुआ और बीस रकअत तरावीह पर जमहूर उलमा, फ़ुक़हा, सुलहा, मुहद्देसीन, आम मोमिनीन मुस्लेमीन का अमल रहा। इन रिवायात से यह भी मालूम हुआ कि अस्ल तरावीह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नत है।

अब इख़्तिलाफ़ ख़त्म

मिरक़ात शरह मिश्कात में बयान गुज़र चुका है कि बीस रकअत तरावीह पर सहाबा-ए-किराम का इज्माअ हो गया और मुअत्ता शरीफ़ में ग्यारह रकअत का भी ज़िक्र है। इन दो रिवायतों को इस तरह जमा किया गया है कि अहदे फ़ारूक़ी में पहले ग्यारह का हुक्म हुआ फिर बीस रकअत पर तरावीह का मुआमला हमेशा के लिये तय हो गया और यही सहाबा-ए-किराम का मक़बूल और तमाम मुसलमानों का मामूल है और बीस से ज़ाइद 22 या 36 या 39 या 40 सब नफ़्ल का बयान है और नफ़्ल की कोई इन्तिहा नहीं।

(7) नूरुल ईज़ाह स. 99 पर है : तरावीह मर्द व औरत दोनों के लिये सुन्नत है और उसकी नमाज़े बा जमाअत सुन्नते किफ़ाया और वह बीस रकअत है दस सलामों के साथ।

(8) कन्ज़ुद्दक़ाइक़ स. 42 पर है : नमाज़े तरावीह मर्द और औरतों दोनों के लिये मस्नून है। इस पर सहाबा और उम्मत के सारे लोगों का और जो इनके बाद हैं उन सब का इज्माअ है। इसका मुनकिर बिदअती, गुमराह मरदूदुश्शहादत है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अल्ला तबारक व तआला ने तुम्हारे वास्ते उसके क़याम को यानी तरावीह पढ़ने को सुन्नत क़रार दिया है। और हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम पर मेरे सुन्नत और मेरे बाद खुलफ़ाए राशेदीन की सुन्नत के मुताबिक़ अमल करना ज़रूरी है। हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने दो या चार रात सहाबा के साथ तरावीह पढ़ी है जैसा कि बुख़ारी में मज़कूर है और हमेशा न पढ़ने का उज़्र यह बयान फ़रमाया कि अन्देशा था कि उन पर फ़र्ज़ न हो जाए और उसके बाद उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के शुरू ज़माने तक लोग तन्हा तन्हा पढ़ते रहे, फिर उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपने ज़माने में जमाअत के साथ पढ़ने का एहतिमाम फ़रमाया। उबय बिन कअब को हुक्म फ़रमाया कि

लोगों को जमाअत के साथ नमाज़ (तरावीह) पढ़ाएं। सहाबाए किराम ने उनकी ताईद फ़रमाई बग़ैर इन्कार सभों ने इसका हुक्म किया। हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत उमर फ़ारूक़ की तारीफ़ इस तरह फ़रमाई : अल्लाह तआला उमर की ख़्वाब गाह को मुनव्वर फ़रमाए जिस तरह उन्होंने हमारी मस्जिदों को मुनव्वर फ़रमाया।

(9) हाशिया कन्ज़ुद्दक़ाइक़ स. 36 पर है : तरावीह के बीस रकअत होने में राज़ यह है कि सुन्नते शुरू होती हैं वाजिबात को मुकम्मल करने के लिये। और यह वित्र के साथ बीस रकअत हैं इसी वजह से तरावीह बीस रकअत हुई।

(10) अल मस्बूत, स. 144 पर है बिला शुबह नमाज़े तरावीह वित्र के अलावा हमारे नज़दीक बीस रकअत है। इमाम मालिक ने फ़रमाया कि तरावीह में सुन्नत छत्तीस रकअत हैं। कहा गया कि जो शख़्स इमाम मालिक रहमतुल्लाहे अलैह के क़ौल पर अमल करना और उनके मस्लक पर चलना चाहे तो मुनासिब है कि यूँ अमल करे जैसा कि इमामे आज़म ने फ़रमाया कि बीस रकअत पढ़े जैसा कि वह सुन्नत है और बाक़ी तन्हा तन्हा पढ़े, हर दो सलाम पर चार रकअत पढ़े यह हमारा मज़हब है।

इन इबारतों और हवालों से वाज़ेह हुआ कि तरावीह की रकअतें बीस हैं और बीस ही मुअक्कदह और सुन्नते ऐन हैं, इसी पर ख़ुलफ़ाए राशेदीन और दीगर सहाबा का इज्माअ व इत्तिफ़ाक़ है। आठ रकअत की बिदअत ग़ैर मुक़ल्लेदीन ने निकाली ली है।

मुसलमानो ! यह ग़ैर मुक़ल्लेदीन अपने को अहले हदीस बताते हैं मगर इनका अमल हदीस पर नहीं। अगर हदीस पर होता तो बीस पढ़ते कि सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है : मेरी सुन्नत के मुताबिक़ अमल करो और हिदायत याफ़्ता ख़ुलफ़ाए राशेदीन की सुन्नत को अपनाओ। और ख़ुलफ़ाए राशेदीन ने बीस पढ़ी है और यह ग़ैर मुक़ल्लेदीन उनकी

सुन्नत के ख़िलाफ़ करते हैं।

नोट : बीस रकअत तरावीह के सुबूत में जो दलाइल पेश किये गए हैं यह सारी बातें उस्तादे मुअज़्ज़म फ़क़ीहुल इस्लाम हुज़ूर शेरे नेपाल, **मुफ़्ती जैश मोहम्मद सिद्दीक़ी बरकाती** साहेब क़िब्ला की किताब **बरकातुल मफ़ातीह** से ली गई हैं।

एतिकाफ़ के फ़ज़ाइल व मसाइल

एतिकाफ़ का मअ़ना : लुग़त में एतिकाफ़ का मअ़ना रुकना और ठहरना है और शरीअत में इबादत और क़ुरबत व सवाब की निय्यत से मस्जिद में ठहरने को एतिकाफ़ कहते हैं। (बेज़ावी)

फ़ज़ाइल : हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : एतिकाफ़ में बैठने वाला गुनाहों से दूर रहता है और नेकियों से उसको इस क़दर सवाब व अज्र मिलता है जैसे उसने तमाम नेकियाँ कीं। **(इब्ने माजह)**

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा की एक रिवायत में यह भी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो कोई अल्लाह की ख़ुश्नुदी की तलब में एक दिन के एतिकाफ़ में बैठता है तो अल्लाह तआला उसके और दोज़ख़ के दरमियान तीन ख़न्दक़ें (गड्ढा, कुँवा) बना देगा जिनमें से हर एक की मसाफ़त मशरिक़ व मग़रिब से ज़्यादा होगी। **(दुर्रे मन्सूर)**

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो कोई रमज़ान के दस दिन एतिकाफ़ में बैठता है तो वह ऐसा है जैसे उसने दो हज और दो उमरे किये। **(बैहिक़ी)**

एतिकाफ़ में बैठने वालों को चाहिये कि अपनी पूरी तवज्जोह अल्लाह तबारक व तआला की इबादत और उसकी रहमत व मग़फ़िरत की तरफ़ रखे, इसके सिवा किसी चीज़ का ख़याल दिल

में आने न दे। ज़िक्र व फ़िक्र, दुरूदो सलाम और तिलावते क़ुरआन और साथ ही नफ़्ल नमाज़ मसलन सलातुत्तस्बीह, नमाज़े तहज्जुद, इशराक़ और चाश्त वग़ैरह की नमाज़ों में मसरूफ़ रहे। हज़रत अता फ़रमाते हैं कि एतिकाफ़ में बैठने वाले की मिसाल उस आदमी की तरह है जिसको किसी शख़्स से हाजत हो और कहता हो कि मैं उस वक़्त तक यहाँ से नहीं हिलुँगा जब तक मेरी हाजत पूरी न हो जाए इसी तरह एतिकाफ़ में बैठने वाला कहता है मैं उस वक़्त तक नहीं हिलुँगा जब तक मेरी मग़फ़िरत न हो जाए। **(अल मबसूत)**

एतिकाफ़ की क़िस्में और अहकाम

(1) **वाजिब एतिकाफ़ :** यह वह एतिकाफ़ है जिसकी नज़्र मानी जाए, मसलन आदमी कहे कि अल्लाह की रज़ा के लिये एक दिन या एक हफ़्ता या एक माह का रोज़ा रखूँगा या नज़्र माने कि अगर मेरा फ़लां काम हो जाए तो इतने दिन या फ़ला दिन एतिकाफ़ में बैठूँगा।

इस एतिकाफ़ के लिये रोज़ा शर्त है, बग़ैर रोज़ा सही नहीं।

(2) **सुन्नत एतिकाफ़** : यह बीस रमज़ान से सूरज डूबने के वक़्त से तीसवीं को सूरज डूबने के बाद या उनतीसवीं को चाँद होने तक है।

हुक्म : यह एतिकाफ़ सुन्नते किफ़ाया है अगर सब छोड़ दें तो सब गुनाहगार और एक ने भी कर लिया तो सब बच जाऐंगे।

मस्अला : इस एतिकाफ़ के लिये भी रोज़ा ज़रूरी है। वरना एतिकाफ़ नहीं होगा।

(3) **मुस्तहब एतिकाफ़ :** वाजिब और सुन्नत एतिकाफ़ से जुदा जो एतिकाफ़ किया जाए वह मुस्तहब है उसके लिये रोज़ा शर्त नहीं। और न उसके लिये वक़्त मुक़र्रर है जब भी मस्जिद में दाख़िल हो एतिकाफ़ की निय्यत कर ले एतिकाफ़ का सवाब मिल जाएगा।

मस्अला : मर्द के एतिकाफ़ के लिये मस्जिद ज़रूरी है और औरत अपने घर की उस जगह में एतिकाफ़ करे जो जगह उसने नमाज़ के लिये मुक़र्रर की है।

मस्अला : एतिकाफ़ करने वाला रात दिन मस्जिद ही में रहे, वहीं खाए पिये और सोए।

इन कामों के लिये मस्जिद से बाहर होगा तो एतिकाफ़ टूट जाएगा।

मस्अला : अगर नफ़्ल एतिकाफ़ तोड़ दे तो उसकी क़ज़ा नहीं और सुन्नते मुअक्कदा एतिकाफ़ तोड़ा तो जिस दिन का तोड़ा सिर्फ़ उसी दिन की क़ज़ा करें और वाजिब एतिकाफ़ को तोड़ा तो अगर किसी मुक़र्रर महीने की मन्नत मानी थी तो बाक़ी दिनों की क़ज़ा करें और अगर मुसलसल एतिकाफ़ की निय्यत मानी थी तो सिरे से फिर से एतिकाफ़ करे और अगर मुसलसल एतिकाफ़ में बैठने की नज़्र नहीं मानी थी तो बाक़ी का एतिकाफ़ कर ले।

शबे क़द्र का बयान

शबे क़द्र या लयलतुल क़द्र जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल व बरतर है वही रात है जिसमें अल्लाह तबारक व तआला ने अपने आख़री नबी हुज़ूर अक़दस मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम पर हिदायत व रहबरी और अनवारो बरकात वाली किताब क़ुरआने मजीद नाज़िल फ़रमाया, जिसके सिर्फ़ एक हर्फ़ तिलावत करने पर दस नेकियाँ अता की जाती हैं, जिसके याद करने और उसके अहकाम पर अमल करने वाले के वालिदैन के सर पर बरोज़े क़ियामत ताज रखा जाएगा जिसकी रोशनी के आगे चाँद व सूरज की रोशनी फीकी पड़ जाएगी। यह वही मुक़द्दस क़ुरआन है जो रब की बारगाह में क़ियामत के दिन इसकी तिलावत करने वाले की सिफ़ारिश कराकर दाख़िले जन्नत कराएगा। चुनाँचे शबे क़द्र की फ़ज़ीलत में अल्लाह तआला इरशाद है।

तर्जमा : बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा और तुमने क्या जाना शबे क़द्र क्या है, शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है, उसमें फ़रिश्ते और जिब्रील उतरते हैं अपने रब के हु क्म से हर काम के लिये, वह सलामती है सुबह चमकने तक।

शाने नुज़ूल

बयान करते हैं कि बनी इस्राईल में एक शख़्स था जो रात में सुबह तक इबादत करता और दिन भर शाम तक अल्लाह की राह में दुश्मनों से जिहाद किया करता था, उसने यह अमल एक हज़ार महीनों तक किया तो अल्लाह तआला ने यह सूरत नाज़िल फ़रमाई और फ़रमाया कि शबे क़द्र में इबादत करना उस आदमी के एक हज़ार माह की इबादत से बेहतर है।

(दुर्रे मन्सूर, जि. 6, स. 629, तफ़सीरे तबरी, जि.30 ,स. 214)

हज़रत अली बिन अरवह रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने चार आबिदों का ज़िक्र किया जिन्हों ने अस्सी साल अल्लाह की इबादत में गुज़ार दिये और एक लम्हा भी उसकी ना फ़रमानी नहीं की। आप इन चार हज़रात हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम, हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम, हज़रत हिज़क़ील बिन अल अजूज़ अलैहिस्सलाम और हज़रत यूशअ बिन नून अलैहिस्सलाम का ज़िक्र किया। सहाबए किराम को यह सुनकर तअज्जुब हुआ, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की या रसूलल्लाह ! आपकी उम्मत को उन लोगों की अस्सी साला इबादत पर तअज्जुब हुआ, अल्लाह तआला ने आप पर उससे बेहतर चीज़ नाज़िल फ़रमाई है। फिर उन्होंने इस सूरत की तिलावत की। यानी इस एक रात की इबादत उस अमल से अफ़ज़ल है जिस पर आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम और आपकी उम्मत ने तअज्जुब का इज़हार किया। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि

वसल्लम और सहाबए किराम बहुत खुश हुए।

(दुर्रे मन्सूर, जि. 6, स. 629, रूहुल मआनी, जि. 30, स. 192,193)

शबे क़द्र नाम क्यूँ ?

तफ़सीर ख़ज़ाएनुल इरफ़ान में है : शबे क़द्र शरफ़ व बरकत वाली रात है, इसको शब्रे क़द्र इस लिये कहते हैं कि इस शब में साल भर के अहकाम नाफ़िज़ किये जाते हैं और फ़रिश्तों को साल भर के वज़ाइफ़ और ख़िदमात पर लगाया जाता है। यह भी कहा गया है कि इस रात की शराफ़त व क़द्र के बाइस इसे शबे क़द्र कहते हैं और यह भी मनक़ूल है कि चूँकि इस शब में आमाले सालिहा मनक़ूल होते हैं और बारगाहे इलाही में उनकी क़द्र की जाती है इस लिये इसको शब्रे क़द्र कहते हैं।

फ़ज़ाइले शबे क़द्र

शबे क़द्र निहायत ही अज़मत और शरफ़ व क़द्र वाली रात है जो हजार महीनों से बेहतर है, जिसमें हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों की झुरमुट के साथ रहमत का पयाम और रहमत व अनवार का तोहफ़ा लेकर ज़मीन पर उतरते हैं और हर खड़े या बैठे इबादत करने वाले मर्द व औरतों के लिये दुआए मग़फ़िरत करते हैं। चुनाँचे हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि इस रात फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं और वह इस रात नमाज़ पढ़ने वालों के क़रीब से गुज़रते हैं तो उन फ़रिश्तों का गुज़रना नमाज़ियों के लिये बा बरकत होता है।

(दुर्रेमन्सूर, फ़ज़ाइले औक़ात)

यह रात सरासर अम्नो सलामती वाली है, इसमें शैतान न तो कोई बुरा अमल कर सकता है और न ही किसी को नुक़सान व तकलीफ़ पहुँचा सकता है। इस रात को जो बन्दा ईमान और ख़ालिस निय्यत के साथ अल्लाह तआला की इबादत, ज़िक्रो अज़कार, तस्बीहो तहलील, औरादो वज़ाइफ़ और तिलावते क़ुरआने मजीद में गुज़ारता है बेशक वह अल्लाह के अज़ाब और

उसके क़हर व ग़ज़ब से नजात व सलामती का परवाना हासिल कर लेता है, उसके तमाम छोटे गुनाह उसके बुराइयों के दफ़्तर से मिटा दिये जाते हैं और इस रात की क़द्र की वजह से बड़े गुनाहों में तख़फ़ीफ़ कर दी जाती है अगर बन्दा गुनाहे कबीरा से भी तौबह कर ले और आइन्दा गुनाहों से बचने का अहद कर ले तो यक़ीनन छोटे बड़े सारे गुनाह मिटा दिये जाते हैं और उनकी जगह नेकियाँ लिख दी जाती हैं। यह किस क़दर मसर्रत व फ़ख़्र की बात है कि इस रात के आने पर हमारे बेहद गुनाह के बावजूद अल्लाह के मासूम फ़रिश्ते हमारी मुलाक़ात की तमन्ना करते हैं और जब रब तआला की तरफ़ से इजाज़त मिल जाती है तो ज़मीन पर उतर आते हैं। हजरत इमाम राज़ी रहमतुल्लाहे अलैह लिखते हैं कि अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया है कि आख़िरत में फ़रिश्ते मुसलमानों की ज़ियारत करेंगे और आकर सलाम पेश करेंगे, फ़रिश्ते जन्नत के हर दरवाज़े से उनके पास आएँ गे और आकर सलाम करेंगे और लैलतुल क़द्र में यह ज़ाहिर फ़रमाया कि अगर तुम मेरी इबादत में मशग़ूल हो जाओ तो आख़िरत तो अलग रही दुनिया में भी फ़रिश्ते तुम्हारी ज़ियारत को आएँगे और आकर दुनिया में भी तुमको सलाम करेंगे। (तफ़सीरे कबीर, जि. 8, स. 446)

आपने मुलाहज़ा कर लिया कि शबे क़द्र की फ़ज़ीलत में अल्लाह तआला ने सूरए क़द्र नाज़िल फ़रमाया और ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि माहे रमज़ान में एक ऐसी रात है जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है, जो इस रात भी भलाई से महरूम रह गया वह बद क़िस्मत है।

(मुस्नद इमाम अहमद, जि. 2, स. 230)

चूँकि लैलतुल क़द्र की इबादत एक हज़ार महीनों की इबादत के बराबर है, इस लिये इस मुक़द्दस रात में ख़ूब कसरत के साथ इबादत करनी चाहिये और इस रात की फ़ज़ीलतों और बरकात व अनवार को अपने दामने में समेटने की पूरी कोशिश करनी चाहिये

हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स ईमानदारी और नेक नियती से इस रात क़याम करेगा उसके पिछले तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।

(मुस्लिम जि. 1, स. 524, मिश्कात, स. 173)

हजरत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि शबे क़द्र में अमल, सदक़ा, नमाज़ और ज़कात हज़ार महीनों से बेहतर है। (दुर्रे मन्सूर, जि. 6, स. 628)

उम्मते मुहम्मदिया की यह इम्तियाज़ी अज़मत व फ़ज़ीलत है कि अल्लाह तआला ने इसे बहुत से ऐसी ख़ूबियों और ख़साइस से नवाज़ा जो शरफ़ किसी और उम्मत को हासिल नहीं हुआ। उन्हीं ख़साइस में से यह भी है कि अल्लाह तआला ने इस उम्मत को उसके नबी हजरत मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम वसल्लम के सदक़े में लैलतुल क़द्र जैसी मुबारक रात से नवाज़ा जिस में सवाल करने वाले को मांगने से सिवा अता किया जाता है, उम्मीदवारे मग़फ़िरत को परवानए नजात व मग़फ़िरत और तोबह करने वाले को तोबह की कुबूलियत की सनद अता की जाती है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : बेशक अल्लाह तआला ने शबे क़द्र मेरी उम्मत को ही अता फ़रमाई है, अगली उम्मतों में से किसी को यह रात अता नहीं की गई। (दुर्रे मन्सूर, जि. 6, स. 371)

फ़रिश्ते ज़मीन पर उतरते हैं

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि जब शबे क़द्र आती है तो अल्लाह तआला हज़रत जिब्राईल को हुक्म देता है, जिब्राईल फ़रिश्तों की जमाअत के साथ ज़मीन पर उतरते हैं, उनके साथ एक सब्ज़ झन्डा होता

है, उसको वह ख़ानए कअबा की छत पर गाड़ देते हैं और वह अपने छः सौ पर फैला देते हैं जो मश्रिक़ से मग़रिब तक फेल कर निकल जाते हैं, उनमें दो पर ऐसे होते हैं जिन्हें हज़रत जिब्राईल शबे क़द्र के अलावा और रातों में नहीं लहराते। जिब्राईल अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों को हुक्म देते हैं कि उम्मते मुहम्मदिया में फेल जाओ। फ़रिश्ते हर नमाज़ी इबादत गुज़ार और ज़िक्रे इलाही करने वाले को सलाम करते हैं, उनसे मुसाफ़हा करते हैं और दुआ के वक़्त उनके साथ आमीन कहते हैं। यह सूरते हाल सुबह तक रहती है। जब सुबह हो जाती है तो हज़रत जिब्राईल आवाज़ देते हैं : ऐ फ़रिश्तो की जमाअत ! वापसी के लिये कूच करो। उस वक़्त वह फ़रिश्ते कहते हैं ऐ जिब्राईल ! अल्लाह ने उम्मते मुहम्मदिया की हाजतों के बारे में क्या किया ? जिब्राईल जवाब देते हैं : अल्लाह ने उन पर रहमत की नज़र फ़रमाई, उनको मुआफ़ कर दिया और बख़्श दिया सिवाए चार आदमियों के जो यह हैं – (1) शराब पीने वाला (2) वालिदैन की ना फ़रमानी करने वाला। (3) रिश्ता तोड़ने वाला और (4) बुग़्ज़ व अदावत रखने वाला।

(तम्बीहुल ग़ाफ़ेलीन, स. 184, गुनयतुत तालेबीन)

एक हैरत अंगेज़ रिवायत

हज़रत कअब अल अहबार रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि सिदरतुल मुन्तहा सातवें आसमान पर है, उसके स ाथ मुत्तसिल ही जन्नत है और यह दुनिया व आख़िरत के दरमियान हद्दे फ़ासिल है, उसके ऊपर जन्नत है, उसकी शाख़ें कुर्सी के नीचे हैं उसमें बे शुमार फ़रिश्ते अल्लाह की इबादत में मशग़ूल हैं, उनकी तादा5द अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, उसकी शाख़ों पर बे शुमार फ़रिश्ते हैं, उसके बीच में हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम का मुक़ाम है, अल्लाह तआला जिब्राईल अलैहिस्सलाम को हुक्म देता है कि वह हर लैलतुल क़द्र को उन फ़रिश्तों के साथ उतरे जो सिदरतुल मुन्तहा में रह रहे हैं, उन

फ़रिश्तों को अहले ईमान के लिये राफ़त व रहमत अता की जाती है, यह तमाम फ़रिश्ते जिब्रईल अलैहिस्सलाम के साथ सूरज गुरूब होने के वक़्त ज़मीन पर उतरते हैं, उस रात ज़मीन के हर गोशे में कोई न कोई फ़रिश्ता होता है, वह या तो अल्लाह की बारगाह में सज्दा रेज़ होता है या अहले ईमान के लिये दुआ में मशग़ूल होता है मगर गिरजा घर, यहूदियों की इबादत गाहें, आतिश कदे, बुत ख़ाने और जिस जगह गन्दगी फेंकी जाती है या जिस घर में नशे वाला हो या नशे की चीज़ हो और जिस घर में बुत नसब किया गया हो या जिसमें घन्टी रखी हुई हो या कोई और मुजस्समा हो या वह कूड़ा करकट डालने की जगह हो, वहाँ रहमत के फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते। यह फ़रिश्ते तमाम रात अहले ईमान मर्द और औरतों के लिये दुआ करते रहते है। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम भी तमाम मोमिनीन से मुसाफ़हा करते हैं, उसकी अलामत या निशानी यह है कि जिस मोमिन से आप मुसाफ़हा करते हैं उसमें उसके जिस्म की रूएं खड़ी हो जाती हैं, उसका दिल नर्म हो जाता है और उसकी आँखों से आंसू बहने लगते हैं।

हज़रत कअ़ब अल अहबाब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं : जो शख़्स लैलतुल क़द्र में तीन दफ़ा **ला इलाहा इल्लल्लाह** पढ़ता है, पहली दफ़ा पढ़ने से अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाह मुआफ़ कर देता है, दूसरी दफ़ा पढ़ने से उसे नारे जहन्नम से आज़ादी का परवाना अता फ़रमाता है और तीसरी दफ़ा पढ़ने से उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देता है। रावी ने हज़रत कअ़ब अल अहबार रज़ियल्लाहो अन्हो से पूछा ऐ अबू इस्हाक़ जो शख़्स सच्चे दिल से कलमा पढ़ेगा उसे यह इनाम मिलेगा ? उन्होंने फ़रमाया : लैलतुल क़द्र में इस कलमे को वही पढ़ता है जिस का दिल सच्चा हो। क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है। यह कलमा उस रात काफ़िर और

मुनाफ़िक़ पर बड़ा भारी पड़ता है जैसे किसी ने उसकी कमर पर पहाड़ रख दिया हो। सुबह तुलूअ होने तक फ़रिश्ते इसी तरह ज़मीन पर रहते हैं। तुलूए फ़ज्र के बाद सबसे पहले जिब्रईल अलैहिस्सलाम ऊपर चढ़ते हैं, सूरज के क़रीब जाकर अपने परों को फैला देते हैं, ख़ुसूसन अपने उन दो सब्ज़ परों को जो वह सिर्फ़ उसी वक़्त फैलाते हैं। इसी वजह से उस वक़्त सूरज की रोशनी फीकी पड़ जाती है, फिर वह एक एक फ़रिश्ते को बुलाते हैं और वह सबके सब फ़रिश्ते ऊपर चढ़ जाते हैं, उन फ़रिश्तों के नूर और जिब्रईल अलैहिस्सलाम के दोनों परों के नूर से सूरज की रोशनी फीकी पड़ जाती है। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम और उनके तमाम फ़रिश्ते उस दिन ज़मीन व आसमान के दरमियान अहले ईमान के लिये दुआ करते रहते हैं, यह उनके लिये भी दुआ करते हैं जिन्होंने रमज़ान के रोज़े ईमानदारी और साफ़ निय्यत के साथ रखे और यह उस शख़्स की लम्बी उम्र की भी दुआ करते हैं जिस शख़्स के दिल में यह ख़याल आए कि अगर वह आइन्दा साल तक ज़िन्दा रहा तो रमज़ान के रोज़े रखेगा।

(तफ़सीर इब्ने कसीर, जि. 4, स. 919,उर्दू)

शबे क़द्र कब ?

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : यह रात रमज़ान की आख़री दस रातों में होती है। जो शख़्स अल्लाह तआला की ख़ुश्नुदी के लिये उसमें क़याम करता है उसके अगले पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं। यह ताक़ रात है, सत्ताइसवीं, उनतीसवीं, पचीसवीं, तैइसवीं या इक्कीसवीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: इस रात की निशानी यह है कि यह रात बिल्कुल साफ़ और रोशन होती है ऐसे मालूम होता है कि उसमें चाँद चमक रहा हो, उसमें सर्दी होती है न गर्मी, सुबह तक उस रात को कोई सितारा

नहीं टुटता, उसकी एक निशानी यह भी है कि जब सुबह सूरज तुलूअ़ होता है तो उसकी शुआएं तेज़ नहीं होती बल्कि चौदहवीं के चाँद की तरह होता है, उस दिन सूरज के साथ शैतान नहीं निकलता। **(मुस्नद इमाम अहमद, जि. 5, स. 324)**

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स शबे क़द्र को ढूँढना चाहता है वह उसको आख़री अशरे में तलाश करे। **(मुस्लिम, जि. 1, स. 369)**

शबे क़द्र कौन सी रात है ?

महबूबे सुब्हानी, ग़ौसे समदानी, शहबाज़े ला मकानी हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहे तआला अलैह फ़रमाते हैं : शबे क़द्र को रमज़ान शरीफ़ के आख़री अशरे में तलाश किया जाए (यानी बीस तारीख़ से आख़री तारीख़ तक) इन तारीख़ों में ज़्यादा मशहूर सत्ताइसवीं शब है। इमाम मालिक के नज़दीक किसी तारीख का तअय्युन वुसूक़ (एतिमाद) के साथ नहीं किया जा सकता, आख़री अशरे की सब रातें बराबर हैं। इमाम शाफ़ई के नज़दीक इक्कीसवी रात ज़्यादा क़ाबिले एतिमाद है। एक क़ौल है कि उनतीसवीं रात, यही उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा का मसलक था। हज़रत अबू मरवह तैइसवीं रात के क़ाइल थे। हज़रत अबू ज़र और हज़रत हसन रज़ियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि पचीसवीं रात है। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने नबिये करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत की है कि वह चौबीसवीं रात है। हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत उबैइ बिन कअ़ब रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा ने फ़रमाया कि वह सत्ताइसवीं रात है। (गुनयतुत तालेबीन, स. 361 उर्दू)

मशहूर सत्ताइसवीं रात है

शबे क़द्र रमज़ान की किस तारीख़ को है, इस बारे में इख़्तिलाफ़ है और बहुत सी रिवायतें वारिद हैं जिनकी तरफ़ इशारा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमा दिया। इसके अलावा दूसरे हज़रात ने कहा है कि शबे क़द्र रमज़ान के आख़री दस रातों के अलावा दूसरी रातों में है। (तफ़सील के लिये शरह सही मुस्लिम, जि. 3, स. 209 का मुतालआ करें)। मगर मशहूर और अकसर उलमा की राए यही है कि रमज़ानुल मुबारक की सत्ताइसवीं रात शबे क़द्र है। दलाइल और क़राइन मुलाहज़ा हों :

(1) अल्लामा क़ुरतबी फ़रमाते हैं कि शबे क़द्र के बारे में इख़्तिलाफ़ है लेकिन अकसरियत इस पर है कि शबे क़द्र सत्ताइसवीं रात है। **(तफ़सीरे क़ुरतबी, जि. 20, स. 134)**

(2) इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी फ़रमाते हैं कि लैलतुल क़द्र के नौ हुरूफ़ हैं और इसका ज़िक्र (सूरह क़द्र में) तीन बार हुआ और तीन का हासिल ज़रब (3x9=27) सत्ताइस होता है। (इस लिये शबे क़द्र सत्ताइसवीं रात को है)। **(तफ़सीरे कबीर, जि. 23, स. 30)**

(3) एक दलील यह भी है कि सूरतुल क़द्र में तीस कलेमात हैं, सत्ताइसवां कलमा हिया هِيَ है।

(तफ़सीरे क़ुरतबी, जि. 20, स. 136)

(4) हज़रत ज़िर बिन जुबैश रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि मैंने हज़रत कअ़ब रज़ियल्लाहो अन्हो से कहा : तुम्हारे भाई हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि जो शख़्स तमाम साल क़याम करेगा वह लैलतुल क़द्र को पा लेगा। हज़रत कअ़ब ने फ़रमाया अल्लाह तआला इब्ने मस्ऊद पर रहम फ़रमाए, उनका इरादा यह था कि कहीं लोग एक रात पर भरोसा करके न बैठ जाएं वर्ना वह ख़ूब जानते थे कि शबे क़द्र रमज़ान में है और रमज़ान के आख़री अशरे में है और वह रमज़ान की सत्ताइसवीं रात है। फिर उन्होंने बग़ैर इन्शाअल्लाह

कहे क़सम खा कर कहा कि शबे क़द्र रमज़ान की सत्ताइसवीं रात है मैंने कहा ऐ अबुल मन्ज़र ! तुम यह बात इतने यक़ीन से किस वजह से कह रहे हो ? उन्होंने कहा, उस दलील या निशानी की बिना पर जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने हमें बतलाई है और वह यह है कि उस रात के बाद जब सूरज तुलूअ होता है तो उसमें शुआएं नहीं होती।

(मुस्लिम, जि. 1, स. 370, मुस्नद इमाम अहमद, जि. 5, स. 130)

(5) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि एक शख़्स ने रमज़ान की सत्ताइसवीं रात में शबे क़द्र को ख़्वाब में देखा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मैं देखता हूँ कि तुम्हारा ख़्वाब आख़री दस दिनों में वाक़ेअ हुआ है लिहाज़ा शबे क़द्र को आख़री अशरह की ताक़ रातों में तलाश करो। **(मुस्लिम, जि. 1, स. 369)**

शबे क़द्र की नफ़्ल नमाज़ें

आपने हदीस पढ़ी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो शबे क़द्र में ईमान और नेक नियती के साथ क़याम करेगा यानी नफ़्ल नमाज़ें पढ़ेगा उसके अगले पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाऐंगे। इस लिये रमज़ान के आख़री अशरे की 21 वीं, 23 वीं, 25 वीं, 29 वीं और खास कर 27 वीं रात ख़ूब इबादत और ज़िक्रे इलाही में मशगूल रहें। अपने गुनाहों, कोताहियों और लग़ज़िशों को याद करके रब की बारगाह में ख़ूब गिरया व ज़ारी और उम्मीद व ख़ौफ़ के आलम में तोबह करे, गुनाहों की मुआफ़ी मांगे, मग़फ़िरत तलब करें, उसकी रहमत को अपनी तरफ़ मुतवज्ज़ह करें और आइन्दा कोई गुनाह न करने का अहद करें। जब इस कैफ़ियत के साथ अल्लाह की बारगाह में आप हाज़िर होंगे तो इन्शाअल्लाह आपकी तौबह क़ुबूल होगी और रहमतो अनवार की बारिशें आप पर छमाछम बरसेंगी।

बाज़ सालेहीन और बुज़ुर्गाने दीन से इस रात की इबादत के जो

तरीक़े मनक़ूल हैं वह यह हैं :

(1) दो रकअत पढ़े

(2) दस रकअत पढ़ें।

(3) सौ रकअत पढ़ें।

(4) ज़्यादा से ज़्यादा हज़ार रकअत पढ़ें।

तरीक़ा : दो, दो रकअत पढ़ें, हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद **इन्ना अन्ज़लनाहु फ़ी लैलतिल क़द्र** पूरी सूरत, उसके बाद क़ुल हुवल्लाहु अहद पढ़ें और हर रकअत के बाद हुज़ूर अलैहिस्सलाम पर दुरूद शरीफ़ पढ़ें। **(रूहुल बयान, जि. 10, स. 494)**

(5) सत्ताइसवीं रजब की रात हो या पन्द्रह शअ़बान या शबे क़द्र की रात या कोई आम रात। इशा के बाद दो रकअतें पढ़ें इस तरह की हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और **सूरह इख़्लास** बीस बार पढ़ें।

फ़ज़ीलत : अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में दो महल बनाएगा जो जन्नत में रहने वालों को नज़र आएंगे।

(गुनयतुत तालेबीन, स. 475 उर्दू)

(6) बारह रकअत पढ़ें नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद तीन बार सूरह फ़ातिहा, तीन बार सूरह इख़्लास, और तीन बार **सुब्हानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि वला इलाहा इलल्लाहु वल्लाहु अकबर** पढ़ें फिर दुआएं मांगें। **(तम्बीहुल ग़ाफ़ेलीन, स. 311)**

नोट : यह नमाज़ और वज़ीफ़ा किसी भी रात पढ़ सकते हैं। क्यूँकि मक़सद अल्लाह तआला की इबादत और उसका ज़िक्र है मगर मुबारक रातों में इनका खास एहतिमाम करें और ख़ूब लगन और ख़ुलूस के साथ अल्लाह की इबादत और उसकी याद में मसरूफ़ रहें।

इन बातों का ख़याल रहे

आप किसी भी मुबारक रातों या दूसरी रातों में इबादत करना चाहें तो इन बातों का ख़याल ज़रूर रहे ताकि इबादत मक़बूल हो

और उस पर अज्रो सवाब ज़्यादा हो।

(1) रिज़्क़े हलाल। (2) तौबह पर क़ायम रहें। (3) अज़ाबे इलाही का ख़ौफ़। (4) अल्लाह तआला के सवाब के वअदों के हुसूल का ज़ौक़ व शौक़। (5) मुशतबह रोज़ी से परहेज़। (6) गुनाहों से बचना। (7) मौत की याद और आख़िरत की फ़िक्र। (8) दुनियावी फ़िक्र व ग़म से आज़ादी। (9) मौत को कसरत से याद करना। (10) आख़िरत को फ़रामोश न करना। (11) दुनिया दारों की महब्बत से दिल का ख़ाली होना।

(गुनयतुत तालेबीन, उर्दू स. 486)

शबे क़द्र के वज़ाइफ़

(1) **अल्लाहुम्मा इन्नका अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल अफ़वा फ़अफ़ु अन्नी** बार बार पढ़ें।

(2) **ला इलाहा इलल्लाह** ख़ूब कसरत से पढ़ें कि यह अफ़ज़ल ज़िक्र है।

(3) कम अज़ कम दस आयतों की तिलावत शबे क़द्र की निय्यत से करें।

(4) क़ुरआने मजीद की तिलावत में मसरूफ़ रहें कि तिलावते क़ुरआन बहुत ही अहम वज़ीफ़ा और अफ़ज़ल व बा बरकत ज़िक्र है।

(5) हुज़ूर अलैहिस्सलाम पर अदब व एहतिराम के साथ दुरूद पढ़ें कि यह सआदत और ख़ुशनसीबी की पहचान है।

(6) **सुब्हानल्लाहि वबि हम्दिहि सुब्हानल्लाहिल अज़ीम** इसके पढ़ने वाले के लिये जन्नत में पोदा लगा दिया जाता है।

(7) **सुब्हानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि वला इलाहा इलल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलिय्यिल अज़ीम 0**

(8) **अल्लाहुम्मग फ़िर ली वरहम्नी वहदिनि वर ज़ुक़नी व आफ़िनी**

(9) **अस्तग़फ़िरुल्लाहा रब्बियल अज़ीम ला इलाहा इल्ला**

हुवल हय्युल क़य्यूम मिन कुल्लि ज़म्बिंव व अतूबु इलैहि ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलिय्यिल अज़ीम। तीन बार

(10) **ला इलाहा इलल्लाहु वह दहु ला शरी का लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर**। दस बार

फिर हाथों को उठाकर पूरी तवज्जोह के साथ दुआ मांगे अपने लिये, वालिदैन के लिये, दोस्त व अहबाब, भाई बहन अहलो अयाल और तमाम उम्मते मुस्लिमा के लिये, अपनी मुरादें मांगें, इन्शाअल्लाह आप की दुआ क़ुबूल होगी।

इसलिये कि जिन वक़्तों में अल्लाह तआला अपने बन्दों की दुआ क़ुबूल फ़रमाता है उनमें शबे क़दर भी है। और अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया है जो बन्दा उससे दुआ करेगा उसकी दुआ ज़रूर क़ुबूल फ़रमाएगा बशर्ते कि बन्दा अपने रब की फ़रमाँ बरदारी करे, उसका हुक्म माने और उस पर ईमान रखे जैसाकि सूरए बक़रह, आयत नं. 186 में इरशाद हुआ।

नोट : अगर आपके ज़िम्मे फ़र्ज़ नमाज़ें हैं तो पहले उन्हें अदा करें इनका अदा करना ज़रूरी है।

इस गदा की गुज़ारिश

मेरे बुज़ुर्गो ! मेरे करम फ़रमा जब आप मख़सूस इबादत में मसरूफ़ हों और आपकी आँखें नम हो जाएं, दुआ के लिये हाथ उठाएं तो अपनी दुआ में मेरी वालिदा मोहतरमा अज़ीमा ख़ातून, वालिदे मोहतरम मौलाना मोहम्मद ज़मीरुद्दीन क़ादरी और मेरी बेटी शगुफ़्ता फ़ातिमा उर्फ़ तरन्नुम फ़ातिमा को याद रखें इनकी दराज़िये उम्र और मग़फ़िरत की दुआ करें। अल्लाह आपके वालिदैन और आपकी उम्र व अमल में बे पनाह बरकतें अता फ़रमाए। आमीन।

ईदुल फ़ित्र और सदक़ए फ़ित्र

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : रोज़ों की गिनती पूरी करो और अल्लाह की बड़ाई बोलो कि उसने तुम्हें हिदायत फ़रमाई।

तफ़सीर : इस आयत के पहले हिस्से की तफ़सीर व तौज़ीह पहले बयान हो चुकी है जिसमें बताया गया था कि रमज़ानुल मुबारक का वह मुक़द्दस महीना है जिसमें अल्लाह तआला ने अपने मुक़द्दस और आख़री नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम पर अपनी आख़री किताब रमज़ाने मुबारक की सबसे अफ़ज़ल व बा बरकत शब शबे क़द्र में उतारी जिसकी फ़ज़ीलत में मुतअद्दिद अहादीस वारिद हुई हैं, बल्कि खुद अल्लाह तबारक व तआला ने इस शब की तारीफ़ बयान फ़रमाई है। चुनाँचे आयत के पहले हिस्से में यह भी बयान हुआ कि रमज़ानुल मुबारक के माह में मुसलमानों पर इस माह के रोज़े फ़र्ज़ हुए जो इस्लाम के पाँच बुनियादी अरकान में से एक रुक्न है, बे उज़्र छोड़ने वाला अल्लाह की बारगाह का मुजरिम और गुनाहगार होगा। और अब इस हिस्से में बयान हुआ कि जब पूरे माहे रमज़ान के रोज़े रख चुको तो अब तुम शुक्राने के तौर पर अल्लाह तआला की तकबीर व तमजीद बयान करो, जिसका बहतरीन तरीक़ा यह है कि जब शव्वाल का चाँद नज़र आ जाए तो ईदगाह जाकर दो रकअत नमाज़ पढ़ो और रास्ते भर अपनी ज़बान को अल्लाह की बड़ाई और पाकी व बुज़ुर्गी बयान करने में मशग़ूल रखो, उस दिन सदक़ा-ए-फ़ित्र भी अदा करो। चुनाँचे एक जगह इरशादे इलाही हुआ -

तर्जमा : बेशक उसने फ़लाह (कामयाबी) पाई जिसने अपने आपको पाक किया और अपने रब के नाम का ज़िक्र करता रहा और नमाज़ पढ़ता रहा। **(अल अअला, अयत 14-15)**

इन आयतों की तफ़सीर मुफ़स्सेरीन ने ज़कात और पन्जवक़्ता नमाज़ से फ़रमाई है और फ़रमाया कि पाक करने से मुराद ज़कात है और नमाज़ पढ़ने से मुराद पन्जवक़्ता नमाज़ की पाबन्दी उसके वक़्तों पर है। जब कि दूसरे मुफ़स्सेरीन ने इसकी तफ़सीर सदक़ए फ़ित्र और नमाज़े ईदुल फ़ित्र से की है और

फ़रमाया कि वह शख़्स कामयाब और फ़लाह वाला हो गया जिसने सदक़ए फ़ित्र अदा किया और नमाज़े ईदुल फ़ित्र अदा की।

हज़रत अबू ख़लदह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैं हज़रत अबुल आलिया रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने फ़रमाया कल जब तुम ईद की नमाज़ पढ़ने जाओ तो मुझसे मिलते हुए जाना। जब मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो फ़रमाया कि क्या तुम ने कुछ खाया है? मैंने अर्ज़ की, हाँ। फिर पूछा : क्या तुम ने ग़ुस्ल किया था ? मैंने अर्ज़ की, हां। फ़रमाया : मुझे सदक़ए फ़ित्र के बारे में बताओ। मैंने अर्ज़ की कि मैंने सदक़ए फ़ित्र अदा कर दिया है। फ़रमाया : मैंने तुम्हें इसी लिये बुलाया था। फिर आपने यह आयते करीम तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया मदीना वाले सदक़ए फ़ित्र और मुसाफ़िरों को पानी पिलाने के अमल को बहुत अफ़ज़ल जानते थे

(दुर्रे मन्सूर, जि. 6, स. 569, तफ़सीरे तबरी, जि. 3, स. 156)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो इन दो आयतों की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि जिसने नमाज़े ईद से पहले सदक़ए फ़ित्र अदा किया और फिर नमाज़े ईद के लिये निकला और इन्हीं से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम इन आयतों की तिलावत फ़रमाते और ईदुल फ़ित्र के दिन ईदगाह तशरीफ़ ले जाने से पहले सदक़ए फ़ित्र (लोगों में) तक़सीम फ़रमा देते थे। **(दुर्रे मन्सूर, जि. 6, स. 568)**

हज़रत नाफ़ेअ हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया : यह आयत नमाज़े ईद से पहले सदक़ए फ़ित्र निकाल देने के बारे में नाज़िल हुई है। **(दुर्रे मन्सूर, जि. 6, स. 568)**

इन रिवायात से यह बात बख़ूबी वाज़ेह हो जाती है कि सूरह बक़रह की आयत नं. 185 के आख़री हिस्से में ईदुल फ़ित्र की फ़ज़ीलत की तरफ़ इशारा है जिसकी ताईद सूरह अल अअ्ला की

आयत नं. 15 से भी हो रही है और ईदुल फ़ित्र के दिन सदक़ए फ़ित्र निकालने का हुक्म भी सूरह अअ़ला की आयत नं. 14 से मालूम हुआ । आप ज़रा आयत नं.14 और पन्द्रह की हुस्ने तरतीब तो देखिये कि पहले सदक़ए फ़ित्र और फिर नमाज़े ईदुल फ़ित्र को बयान फ़रमाया, क्योंकि नमाज़े ईदुल फ़ित्र से पहले सदक़ए फ़ित्र अदा करना ज़रूरी है, अगरचेह बाद नमाज़ भी अदा करेगा तो हो जाए मगर अफ़ज़ल और बेहतर नमाज से पहले अदा करना है।

ईद का नाम ईद क्यों रखा ?

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि ईद को ईद इस लिये कहते हैं कि अल्लाह तबारक व तआला ईद के दिन अपने बन्दों की तरफ़ फ़रहत व ख़ुशी को बार बार लाता है और ईद का मअ़ना बार बार आना है इस लिये इसे ईद कहते हैं। या यह कि उस दिन बन्दा चूँकि गिरया व ज़ारी (अल्लाह की बारगाह में आजिज़ी व इन्किसारी के साथ गिड़गिड़ाना) की तरफ़ लौटता है और उसके ऐवज़ अल्लाह तआला बख़्शिश व अता की जानिब रुजूअ़ फ़रमाता है और फ़र्ज़ के बाद बन्दा सुन्नत की तरफ़ पलटता है, माहे रमज़ान के रोज़े रखने के बाद शव्वाल के छः रोज़ों की तरफ़ मुतवज्ज़ह होता है, इस लिये उसको ईद कहते हैं।

(गुनयतुत तालेबीन मुलख़्ख़सन)

तारीख़े ईद

हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने पहली नमाज़े ईद सन् 2 हिजरी में अपने सहाबा के साथ अदा की फिर उसे कभी तर्क नहीं फ़रमाया। ईद का दिन मुसलमानों के लिये ख़ुशियों और मसर्रत का दिन है, उस दिन लोग एक दूसरे को मुबारक बादी देते हैं और अपनी ख़ुशियों का इज़हार करते हैं। ईदुल फ़ित्र इस्लामी माह के दसवें माह शव्वालुल मुकर्रम की पहली तारीख़ को अदा करते हैं । जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपने अस्हाब के साथ

हिजरत फ़रमा कर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो देखा कि वहाँ के बाशिन्दे साल में दो दिन ख़ुशी में गुज़ारते हैं। यह देखकर आपने मुसलमानों के लिये भी दो दिन ईद के लिये मुक़र्रर फ़रमा लिया, एक ईदुल फ़ित्र और दूसरा दिन ईदुज़्ज़ुहा (बकरा ईद)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम जब मदीना तशरीफ़ लाए उस वक़्त मदीना वाले दो दिन ख़ुशी मनाते । आपने फ़रमायाः यह क्या हैं ? लोगों ने अर्ज़ की : ज़मानए जाहिलियत में हम इन दिनों में ख़ुशी मनाते थे । हुज़ूर ने फ़रमाया : अल्लाह तआला ने इनके बदले में तुम्हें इनसे बेहतर दो दिन दिये, ईदुज़्ज़ुहा और ईदुल फ़ित्र। **(अबू दाऊद जि. 1, स. 161)**

ईदुल फ़ित्र जिसे मुसलमान शव्वालुल मुकर्रम की पहली तारीख़ को अदा करते हैं और ईद गाह जाकर अपने रब की बारगाह में कुबूलियते रोज़ए रमज़ान के शुक्राने में दो गाना (दो रकअत) नमाज़ अदा करते हैं और रब तआला अपने बन्दे की मग़फ़िरत फ़रमा देता है अपने फ़रिश्तों को मुसलमानों के लिये दुआए मग़फ़िरत करने पर मुक़र्रर फ़रमा देता है, उस दिन की और ईदुल फ़ित्र की रात की बड़ी फ़ज़ीलतें आई हैं ईदुल फ़ित्र की रात को इनआम वाली रात भी कहा जाता है जिसमें बन्दए मोमिन अपने रब की तरफ़ से इनआम व इकराम पाता है।

ईदुल फ़ित्र की रात और दिन की फ़ज़ीलत

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा की बयान करदा एक लम्बी हदीस में है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जब ईदुल फ़ित्र की रात आती है तो उसे इनआम वाली रात कहा जाता है और ईदुल फ़ित्र की सुबह होती है तो अल्लाह तआला तमाम शहरों में फ़रिश्तों को फैला देता है जो गली कूचों में फैल जाते हैं और ऐलान करते हैं जिसको

जिन्न व इन्स के सिवा तमाम मख़लूक़ सुनती है। (वह ऐलान यह है) ऐ उम्मते मुहम्मदिया ! रब्बे करीम की तरफ़ चलो वह तुम्हें अज्रे अज़ीम अता फ़रमाएगा और तुम्हारे बड़े गुनाहों की मग़फ़िरत फ़रमा देगा और जब लोग ईदगाहों में आ जाते हैं तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाता है : ऐ मेरे फ़रिश्तो ! उस मज़दूर की क्या उजरत है जो अपना काम पूरा करे ? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं कि उस मज़दूर को पूरी पूरी उजरत दी जाए। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : ऐ फ़रिश्तो मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने उनको रोज़ों और रात की नमाज़ों का अज्र अपनी ख़ुश्नोदी और उनके गुनाहों की मग़फ़िरत बना दिया। फिर फ़रमाता है ऐ मेरे बन्दो ! मुझसे मांगो, मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! आज तुम अपनी आख़िरत के लिये मुझसे जो मांगोगे मैं तुम को वह ज़रूर दूँगा और जो कुछ अपनी दुनिया के लिये मांगोगे मैं उसका लिहाज़ रखूँगा। मेरी इज़्ज़त की क़सम ! जब तक तुम मेरे अहकाम की निगेहबानी करते रहोगे, मैं तुम्हारी ख़ताओं और लग़्ज़िशों की पर्दा पोशी करता रहूँगा और तुम को उन लोगों के सामने जिन पर सज़ा वाजिब हो चुकी है रुसवा नहीं करूँगा, तुम लोट जाओ इस हाल में कि तुम्हारी बख़्शिश हो गई, तुम ने मुझे राज़ी किया, मैं तुम से राज़ी हो गया। फ़रिश्ते यह बशारत सुनकर ख़ुश हो जाते हैं और माहे रमज़ान के ख़ातमे पर उम्मते मुहम्मदिया को यह ख़ुश ख़बरी सुनाते हैं।

(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 8, स. 267 व 68, तम्बीहुल ग़ाफ़ेलीन, स. 184)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : शबे क़द्र को जिब्रीले अमीन फ़रिश्तों की जमाअत के साथ ज़मीन पर उतरते हैं और हर उस शख़्स के लिये दुआए मग़फ़िरत करते हैं जो खड़े या बैठे अल्लाह तआला का ज़िक्र कर रहे होते हैं और जब ईदुल फ़ित्र का दिन आता है तो अल्लाह तआला अपने बन्दों

से फ़रिश्तों पर फ़ख़्र फ़रमाता है। फ़रमाता है कि उस मज़दूर की क्या मज़ूदरी है जिसने अपना काम पूरा किया हो ? फ़रिश्ते अर्ज करते हैं : ऐ हमारे रब उसकी जज़ा (बदला) यह है कि उसे पूरा अज्र दिया जाए। अल्लाह तआला फ़रमाता है : ऐ मेरे फ़रिश्तो ! मेरे बन्दों और बान्दियों ने मेरे उस फ़रीज़े को अदा कर दिया जो मैंने उस पर फ़र्ज़ किया था। फिर वह दुआ के लिये पुकारते हुए (ईदगाह) निकले और मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल, करम व बलन्दी और बलन्द मरतबे की क़सम मैं ज़रूर उनकी दुआ क़ुबूल करूँगा। अल्लाह तआला फ़रमाता है : ऐ मेरे बन्दो ! लोट जाओ मैंने तुम्हें बख़्श दिया और तुम्हारी बुराइयों को नेकियों में बदल दिया। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि पस लोग इस हाल में वापस होते हैं कि उनकी बख़्शिश हो चुकी होती है।

(मिश्कात शरीफ़, स. 182)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह तआला के नज़दीक दिनों में से चार दिन, महीनों में से चार महीने, औरतों में से चार औरतें महबूब व पसन्दीदा हैं। जो चार दिन अल्लाह तआला के नज़दीक महबूब और पसन्दीदा हैं उनमें से चौथा दिन ईदुल फ़ित्र का है। जब बन्दे माहे रमज़ान के रोज़े रख लेते हैं और ईद की नमाज़ पढ़ने बाहर निकलते हैं तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाता है कि हर काम करने वाला उजरत तलब करता है, मेरे बन्दों ने महीना भर रोज़े रखे और अब ईद के लिये निकले हैं और अपना अज्र तलब कर रहे हैं, मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने उन्हें बख़्श दिया है और पुकारने वाला पुकार कर कहता है : ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की उम्मत ! तुम लोट जाओ अल्लाह तआला ने तुम्हारी बुराइयों को नेकियों में बदल दिया है।

(तम्बीहुल ग़ाफ़ेलीन, स. 190, मुलख़्ख़सन)

यह फ़ज़ाइल व करामात हासिल हैं ईदुल फ़ित्र के दिन को, अल्लाह तआला उस दिन अपने तमाम बन्दों की मग़फ़िरत फ़रमा

देता है जिन्होंने माहे रमज़ान के रोज़े रखे और अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिये ज़बानों पर अल्लाह की तकबीर व तहमीद और उसकी पाकी व बुज़ुर्गी की डालियाँ सजाए ईदगाह पहुँचकर दो रकअत अदा करते हैं और रब की बारगाह में दुआ के लिये हाथ उठाते हैं और जब बन्दे महसूस कर लेते हैं कि अल्लाह ने उसके रोज़े कुबूल फ़रमा लिये हैं तो ख़ुशी व मसर्रत की लहरें उनके चेहरों पर दौड़ने लगती है और उसी ख़ुशी का इज़हार एक दूसरे को मुबारकबादी देकर करते हैं और उसी दिन का नाम ईदुल फ़ित्र है। इस लिये मुसलमानो ! जब हमारे ईद का दिन आए तो हमें चाहिये कि उसी तरह हम उसे मनाएं जिस तरह मनाने का हुक्म है, दूसरी क़ौमों की तरह हम गाने बजाने, रक़्स व सुरूर और ख़ुराफ़ात व बिदआत में डूबकर न मनाएं, ईद सिर्फ़ अच्छे उम्दा और लज़ीज़ खानों व मशरूबात, अच्छे कपड़े ज़ेबतन करने और शेहवत व लज़्ज़त से लुत्फ़ अन्दोज़ होने का नाम नहीं बल्कि मुसलमानों की ईद तो अल्लाह की ताअत व बन्दगी में होती है, अल्लाह से परवानए नजात हासिल करने, गुनाहों की मग़फ़िरत कराने में होती है।

बाज़ जगहों पर देखा गया है कि ईद की नमाज़ अदा करने के बाद लोग इमाम साहेब को बड़े धूम धाम के साथ घोड़ी पर बिठाते हैं यह बहुत अच्छी बात है कि लोग अपने इमाम की ताज़ीम व तौक़ीर करते हैं मगर उसके साथ ढोल ताशे बाजे और नाच का होना गुनाह और अल्लाह व रसूल की नाराज़गी का काम है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने ढोल ताशे और बाजे बजाने को शैतानी काम फ़रमाए इस लिये हमें इस ख़ुराफ़ाती काम से बचना चाहिये।

सदक़ए फ़ित्र

पिछले सफ़ा में बयान हो चुका कि जब नमाज़े ईद के लिये ईदगाह को निकले तो उससे पहले सदक़ए फ़ित्र निकाल कर मुस्तहेक़्क़ीन में तक़सीम कर दे, जैसा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम का मामूल था ताकि उन ग़ुरबा, फ़ुक़रा और मसाकीन की जमाअत भी अपनी ख़ुशी का इज़हार कर सकें। हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने एक शख़्स को भेजा कि मक्का की गलियों में ऐलान कर दे कि सदक़ए फ़ित्र वाजिब है। **(तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 146)**

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने सदक़ए फ़ित्र मुक़र्रर फ़रमाया ताकि बेकार और बेहूदा बात से रोज़े की तहारत हो जाए और मिस्कीनों के खाने का इन्तिज़ाम हो जाए। **(मिश्कात, स. 160)**

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : बन्दे का रोज़ा आसमान व ज़मीन के बीच लटका रहता है जब तक सदक़ए फ़ित्र अदा न कर दे। **(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 4, स. 316)**

सदक़ए फ़ित्र के मसाइल

(1) ईद के दिन सुबह सादिक़ तुलूअ होते ही सदक़ए फ़ित्र वाजिब होता है।

(2) सदक़ए फित्र हर मुसलमान आज़ाद मालिके निसाब पर जिसका निसाब हाजते अस्लिया से फ़ारिग़ हो वाजिब है, इसमें आक़िल बालिग़ और माले नामी (बढ़ने वाला मसलन सोना चाँदी और तिजारत का माल) होने की शर्त नहीं।

(3) सदक़ए फ़ित्र की मिक़दार यह है : गेहूँ या उसका आटा या सत्तू आधा साअ खजूर या मुनक्का या जौ या उसका आटा या सत्तू एक साअ।

(4) गेहूँ या जौव सदक़ए फ़ित्र में देने से उसकी क़ीमत देना अफ़ज़ल है। **(बहारे शरीअत, हिस्सा 5, स. 66-71)**

नोट : एक साअ़ अंग्रेज़ी वज़न से चार किलो तक़रीबन चौरानवे (94) ग्राम का और आधा सअ़ दो किलो तक़रीबन सैंतालीस (47) ग्राम का होता है। **(फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल)**

ईद के दिन के मुस्तहब्बात

(1) बाल बनवाना। (2) नाख़ून तरशवाना। (3) ग़ुस्ल करना (4) मिस्वाक करना। (5) अच्छे कपड़े पहनना। नया हो तो नया वर्ना धुला। (6) अंगूठी पहनना। (7) ख़ुश्बू लगाना। (8) सुबह की नमाज़ मस्जिदे महल्ला में पढ़ना। (9) ईदगाह जल्द जाना। (10) नमाज से पहले सदक़ए फ़ित्र अदा करना। (11) ईदगाह को पैदल जाना। (12) दूसरे रास्ते से वापस आना (13) नमाज को जाने से पहले चन्द खजूरें खा लेना। तीन, पाँच, सात या कमोबेश मगर ताक़ हों, खजूरें न हों तो कोई मीठी चीज़ खा लें। (14) ख़ुशी ज़ाहिर करना। (15) कसरत से सदक़ा देना। (16) ईदगाह को इत्मीनान व वक़ार और नीची निगाह किये जाना। (17) आपस में मुबारक बाद देना।

(बहारे शरीअत, हिस्सा 4, स. 106, आलमगीरी, जि. 1, स. 149)

हो सके तो यह भी करें

ईद के दिन जहाँ आप ख़ुशी व मसर्रत का इज़हार करें, एक दूसरे को मुबारकबादी दें वहीं अपने मुसलमान अमवात को न भूलें मां बाप और दूसरे रिश्तेदार और तमाम उम्मते मुस्लिमा को जो दुनिया से जा चुके हैं अपनी दुआओं में याद रखें, उनकी क़ब्रों की ज़ियारत को जाएं और फ़ातिहा पढ़कर उन्हें ईसाले सवाब करें। हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स ने ईद के दिन तीन सौ मरतबा **सुब्हानल्लाहि व बि हम्दिही** पढ़ी और मुसलमान मय्यित की रूहों को उसका सवाब हदया किया तो हर मुसलमान की क़ब्र में एक हज़ार अनवार दाख़िल

होते हैं और जब वह मरेगा अल्लाह तआला उसकी क़ब्र में एक हज़ार अनवार दाख़िल फ़रमाएगा। **(मुकाशाफ़तुल क़ुलूब, 710 उर्दू)**

ऐ अल्लाह ! मुझ गदा को अपने रहमत वाले हबीब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तुफ़ैल मुआफ़ फ़रमा और मेरी इन टूटी फूटी तहरीर में हो जाने वाली ग़लतियों को मुआफ़ फ़रमा इस रिसाले को मेरी मग़फ़िरत का ज़रीआ बना, ईमान पर ज़िन्दा रहने और ईमान पर ही ख़ातिमा अता फ़रमा। आमीन।

गदाए मुस्तफ़ा अबुल इत्र

मोहम्मद अब्दुस्सलाम अमजदी बरकाती

(तारा पट्टी नेपाल)

उस्ताज : जामिआ ग़ौसिया ग़रीब नवाज़, (इन्दौर)

11 शअ़बानुल मुअज़्ज़म 1433 हि.

मुताबिक़ 2 जुलाई सन् 2012